हिन्दी

(संक्षिप्त बुद्धचरित) (अध्याय 1) (आरंभिक जीवन)
(कक्षा 8)

प्रश्न 1:

सिद्धार्थ के बारे में महर्षि असित की क्या भविष्यवाणी थी? संक्षेप में बताइए।

उत्तर 1:

यह कुमार विषयों से विरक्त होकर, राज् को त्यागकर, अपने तप से तत्व ज्ञान प्राप्त करेगा। यह ज्ञानमय सूर्य सांसारिक मोह के अंधकार को अवश्य नष्ट करेगा। महर्षि असित ने बताया- दुख रूपी समुद्र में डूबते हुए संसार को यह बालक ज्ञान की विशाल नौका से उस पार ले जाएगा। यह धर्म की ऐसी नदी प्रवाहित करेगा, जिसमें प्रज्ञा का जल होगा, शील का तट होगा और समाधि की शीतलता होगी।

इसी धर्म -नदी के जल को पीकर तृष्णा की पिपासा से व्याकुल यह संसार शांति लाभ करेगा। जैसे भटके हुए राही को कोई राह बताता है, वैसे ही संसार रूपी जंगल में भटके मनुष्यों को यह मोक्ष का सीधा मार्ग बताएगा।

प्रश्न 2:

आप कैसे कह सकते हैं कि बालक सिद्धार्थ विशेष मेधावी था?

उत्तर 2:

बालक सिद्धार्थ अत्यंत मेधावी था। जिन विद्याओं को सामान् बालक वर्षों में सीखते हैं, उनको उसने कुछ ही समय में सीख लिया।

प्रश्न 3:

महाराज शुद्धोदन सिद्धार्थ की सुख-सुविधाओं की व्यवस्था के लिए क्यों विशेष प्रयत्नशील रहते थे?

उत्तर 3:

महाराज शुद्धोदन को महर्षि असित द्वारा की गई भविष्यवाणी याद थी कि यह बालक बड़ा होकर मोक्ष-प्राप्ति के लिए वन की ओर प्रस्थान कर सकता है। इसीलिए, उन्होंने अंत:पुर में ऐसी व्यवस्था करवाई जिससे सिद्धार्थ की आसिक्त सांसारिक विषयों में बढ़े और वह भोग-विलास में इतना लिप्त हो जाए कि उसे किसी प्रकार का वैराग्य न हो और वह राजमहलों में रहकर भोग-विलास में डूबा रहे।

प्रश्न 4:

राजकुमार सिद्धार्थ के मन में संवेग की उत्पति के क्या कारण थे?

उत्तर 4:

राजकुमार सिद्धार्थ ने जब किसी वृद्ध, किसी रोगी और किसी मृत व्यक्ति को देखा और अपने सारथी से इसका कारण पूछा तो सारथी के जवाब सुनकर उन्हें जीवन का यथार्थ समझ में आ गया। यही उनके मन में संवेग की उत्पत्ति का कारण था।